रात्रिक्लास 28/4/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

सभा में कौन आकर बैठा? (बाप–दादा) बाप का भी नाम सुनाओ, दादा का भी नाम सुनाओ। (शिवबाबा, ब्रह्मा दादा) शिव तो निराकार है पीछे? रथ का रथी है गीता में। और कोई शास्त्र में नहीं है। गीता में दिखलाते हैं रथ का रथी। रथ बनाया है घोड़े–गाड़ी का। आत्मा को तो रथ चाहिए मनुष्य का। भक्ति मार्ग में घोड़े–गाड़ी का दे दिया है। फिर शिव के मंदिर में बैल रख दिया है। तो क्या बैल कहें वा घोड़े गाड़ी या कोई भागीरथ? भाग्यशाली रथ तो मनुष्य को कहा जाता है। बाप बतलाते हैं मैं किसका रथ लेता हूँ। जो अपने जन्मों को नहीं जानते। मैं जानता हूँ। बहुत जन्म भी कौन लेते हैं? यह। पहले–2 सतयुग में तो बहुत जन्म भी इसने लिया होगा। सांवरा गोरा भी यह बना होगा। दुनियां भी पतित तो शरीर भी पतित। बुलाने वाले भी पतित। नम्बरवन पावन सो ही नम्बरवन पतित। कितना अच्छी रीत समझाया जाता है। म्युज़ियम आदि में आते हैं, कहते हैं ब्रह्मा में क्यों? और किसमें क्यों नहीं आता? अरे, ड्रामा बना हुआ है। उनका भी रथ है। रचयिता और रचना के आदि, मध्य, अंत का राज़ खुद बतलाते हैं। भगवानुवाचः भगवान निराकार को ही कहा जाता है। देहधारी को भगवान नहीं कहा जा सकता है। ब्रह्मा देवताएं नमः कहना भी रॉंग है। ब्रह्मा देवता होता नहीं। विष्णु देवता कहते हैं; परन्तु पहचान चाहिए। विष्णु ल.ना. के दो रूप को कहा जाता है; परन्तु सूक्ष्मवतन में ज़ेवर आदि कहां से आई? यह सभी सा. की बातें हैं। भक्ति मार्ग वालों ने विष्णु को सजाकर विष्णु अवतार कहते हैं। वास्तव में सभी आत्माएं अवतरित होती हैं; क्योंकि ऊपर से आकर पार्ट बजाती हैं। वह गर्भ में अवतरित है। बाप कहते हैं मैं रथ में प्रवेश करता हूँ। लोन किराया पर लेता हूँ। शिवबाबा को किराया देना पड़ता है। ऊँच ते ऊँच बाप रथ भी तो ऐसा ही लेंगे ना। रथ लेकर नाम रखते हैं ब्रह्मा। नहीं तो ब्रह्मा कहां से आया? ब्रह्मा के बाप का नाम बताओ। देहधारी है ना। यह सभी वण्डरफुल नई–2 गुह्य बातें बाप ही आकर बच्चों को समझाते हैं। बाप खुद कहते हैं जो अपने को ईश्वर कहते हैं वह हिरण्यकश्यप जैसा दैत्य है। भगवानुवाच है ना। भगवान बैठ समझते हैं। उस ज्ञान मार्ग में लड़ाई का नाम–निशान भी नहीं। संगम पर ब्राह्मण बच्चे हिंसक नहीं होते। अहिंसक होते हैं। क्रोध करना भी हिंसा है। किसको रंज होता है। आजकल के बच्चे तो जैसे जिन हैं। माँ–बाप को तंग करते रहते हैं। कृष्ण कोई ऐसे नहीं, ऐसा कुछ करता था तब बांधी थी। नहीं। इस समय के बच्चे ऐसे हैं। तो भी हाथ न चलाना है। सतयुग में तो ऐसा कुछ होता ही नहीं। गाया हुआ है अतिइन्द्रिय सुख गोपीवल्लभ के गोप–गोपियों से पूछो। पुरुषोत्तम संगमयुग को कोई भी नहीं जानते। बाप बैठ समझाते हैं। उत्तम पुरुष बनना चाहिए ना; इसलिए इनको पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है। मास वा वर्ष नहीं होता। भक्तिमार्ग में फिर दो मास वा वर्ष रख दिया है। यह बाप–दादा है। टीचर भी है। सुप्रीम बाप, सुप्रीम टीचर, सुप्रीम सदगरू। सर्व की सद्गति करने वाला है। बेहद की हिस्ट्री जॉग्राफी भी यह बतलाते हैं। मनुष्यों को तो पता नहीं है। बाप आकर हर बात समझाते हैं। चिट्ठी भी आती है बाप दादा के नाम पर या शिवबाबा केअर ऑफ प्रजापिता ब्रह्मा या प्रजापिता ब्रह्मा कुमारियां। तो गोया केअर ब्रह्मा हुआ ना। है ही कुमारी। चिट्ठयां उन पास जाती हैं। शिवबाबा है मालिक। वही हिसाब देते हैं। यह ट्रस्टी है शिवबाबा का ख़ज़ाने का। हिसाब–किताब शिवबाबा देते। पदमापति शिवबाबा बनाते हैं ना कि ब्रह्मा। ज्ञान मिलने से भक्ति छूट जाती है। ज्ञान ज़िन्दाबाद, भक्ति मुर्दाबाद। फिर भक्ति ज़िंदाबाद, ज्ञान मुर्दाबाद। ज्ञान बाप ही देते हैं। ज्ञान रत्न हीरे मिसल है जो बाप ही देते हैं। बाकी शास्त्रों में ज्ञान तो पत्थरों मिसल है। पत्थर बुद्धि बन गये हैं। वापस कोई भी जा नहीं सकता। रावण राज्य है कांटों का जंगल। रामराज्य है फूलों का बगीचा। आयु भी वहां बहुत बड़ी। काल खा न सके। बाप है कालों का काल। कहते हैं इनको भगवान ने भेजा है। बाप कहते हैं तुमको काल पर विजय पहनाता

हूँ । सतयुग में काल होता ही नहीं। तुम अमरलोक में थे फिर 84 जन्म लेते मृत्युलोक मे आये हो। यह है नई बात जो फिर पुरानी हो जाती है। त्योहार भी सभी इस सयम के ही हैं। रामायण भी इस (संगमयुग) का है। भक्तिमार्ग को दुर्गति मार्ग, ज्ञान मार्ग को सदगति मार्ग कहा जाता है। भक्ति में ले जाने वाला अनेक गुरू। ज्ञान में ले जाने वाला एक गुरू। कहते हैं तुम सतोप्रधान थे ना। फिर सतो, रजो, तमो में आये हो। सतयुग में तुम्हारी खुशी डिग्री बहुत ऊँची थी। फिर डिग्री कम होती जाती है। फिर याद से ही डिग्री चढ़ेगी। पावन बनेंगे। पतित–पावन बाप है। बाकी गंगा थोड़े ही पतित–पावनी होती है। पत्थर बुद्धि समझते नहीं। बाप कहते हैं पावन बनाने वाला मैं हूँ। भक्ति में धक्के खाते हैं। सतयुग में तो अंधियारा होता ही नहीं। यह संगमयुग है। ब्राह्मण बच्चे ही जानते हैं और कोई में ज्ञान है ही नहीं। तुम अभी देवता बन रहे हो। वहां फिर ज्ञान की प्रारब्ध होगी। बाप संगम पर आकर सभी की सदगति करते हैं। फिर यह ज्ञान प्रायःलोप हो जाता है। गाया जाता है सर्व की सद्गति दाता एक। सर्व का दुर्गति का दाता अनेक। यह भी समझ की बात है ना। कहते हैं दर्शन करना है। बोलो किसका करेंगे? गुरू तो यहां है नहीं। यह तो सुप्रीम टीचर है। टीचर का दर्शन करने से पढ़ाई सीख टीचर बन जावेंगे क्या? बाबा मिलते ही हैं बच्चों से। बाकी तो सभी बन्दर ना(ग) बलाएं हैं ना। सन्यासी भी कहते हैं स्त्री नागिन है। तो क्या नाग नहीं है। सन्यासी हैं। सन्यासी हैं भक्तिमार्ग के शास्त्र के आचार्य। शिव है ज्ञान का आचार्य। वह भी सुनाते हैं, यह भी सुनाते हैं। वह शास्त्र सुनाते। यह तो ज्ञान का सागर है। सो जब आवे तब तो सुनावे ना। इसको कहा जाता है टावर ऑफ सायलेन्स। टॉवर ऑफ हेल्थ, टॉवर ऑफ वेल्थ। वहां तुम्हारी प्रकृति दासी बनती है। अभी तुम प्रकृति के दास हो फिर तुम सृष्टि के मालिक बन जाते हो। वहां कब तूफान नहीं लगते। धरती नहीं हिलती। यहां कोई झांझ आदि नहीं बजती है। सृष्टि चक्र का ज्ञान भी बुद्धि में है। सेकण्ड में रचयिता और रचना को जानते हो। उनको ज्ञान कहा जाता है। भक्ति में तो धक्के खाते रहते हैं। इसमें है शान्ति। शरीर निर्वाह लिए कम(र्म) भी करना है। दिल यार डे, कम कार डे। जैसे आशुक–माशुक होते हैं। माशुक याद आन(ने) से ही माशुक सामने खड़ा हो जाता है। वह आशुक होते हैं दुनियावी। तुम हो भक्तिमार्ग के आशुक। भक्तिमार्ग में तुम भी कहते हो बाबा आप आवेंगे तो हम आप पर कुर्बान जावेंगे। वारी जावेंगे; परन्तु अभी देखो कोई बिरले कुर्बान जाते हैं। भक्ति के हैं गुरू ढेर। स्त्रियों के पति गुरू ढेर। यह पति नहीं। यह तो बाप, टीचर और गुरू है। बाप तो है ही। ब्रदरहुड है सभी आत्माओं का एक ही बाप। भक्ति में दुःख में याद करते हैं। सुख में कोई याद करते नहीं। अच्छा, मीठे–2 रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का याद–प्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप का नमस्ते–नमस्ते।

प्वाइन्ट्सः– तुम बच्चे ज्ञान ओर योग में ज़ोर भर जावेंगे तो फिर तुमको मकान आदि भी सभी आपे ही मिल जावेंगे। योग और ज्ञान ही काम आवेंगे। जहां देवताओं के मंदिर हों, भक्त लोग हों उन्हों को जाकर समझाओ। वहां मंदिरों में तो भक्त लोगदर मिलेंगे। वहां है भक्ति। यहां है ज्ञान। बाप सर्विस की युक्तियां बहुत बताते रहते हैं। बच्चों को पुरुषार्थ करना है। अखबार में भी तुम डाल सकते हो। वण्डर की बात है भगवानुवाच काम महाशत्रु है, तुम काम चिक्षा पर चढ़कर काले बन गये हो। तुम फिर काम चिक्षा पर बिठाकर काले बनाने के लिए यह हॉल आदि बनाते हो। हम सभी को ज्ञान चिक्षा पर बिठावेंगे तो उन्हों का कल्याण हो जावेगा। ऐसी श्रीमत है। शिवबाबा बहते हैं मेरा भण्डारा भरपूर है। कुँआ भरा हुआ है। बाबा कहते हैं बच्चे तुम्हारी हुण्डी हम संवार लेंगे। सांवलशाह है ना। वह तो एवर गोरा है। अच्छा, ओम।

हलो, सर्व सेन्टर निवासी नूरे रत्नों ब्राह्मण कुलभूषणों प्रति हम सभी मधुबन निवासियों की याद प्यार ले बाप दादा सहज स्वीकार करना जी। अच्छा, अभी विदाई।